भारत में कॉफ़ी का उपभोग-2008

बाज़ार के बड़े व्यापारियों के स्वामित्व की जानकारी की उपलब्धता के अलावा स्वदेशी कॉफ़ी उपभोग के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। कॉफ़ी के स्वदेशी उपभोग बढ़ाने के लिए किसी भी योजना बनाने से पूर्व कॉफ़ी बोर्ड ने पेय पदार्थों के सेवन से संबंधित आदतें,व्यवहार व अभिरुचियों के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर विस्तृत अध्ययन किया है।

यह कॉफ़ी बोर्ड द्वारा किया गया चौथा विस्तृत औपचारिक अध्ययन है। कॉफ़ी बोर्ड द्वारा नियमित अंतराल में ऐसे अधिक विस्तृत उपभोग परीक्षण आयोजित करने का प्रस्ताव दिया जाता है।

निम्न बातों के निरीक्षण के लिए रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है:-

- शहरी (दक्षिण व उत्तर) तथा ग्रामीण (दक्षिण) क्षेत्रों के कॉफ़ी उपभोगों से संबंधित आदतें व व्यवहार
- स्थान एवं प्रकार के अनुसार कॉफ़ी उपभोग
- दैनिक पेय उपभोगों में से कॉफ़ी का शेयर
- कॉफ़ी के प्रति अभिरुचि एवं कॉफ़ी उपभोग संबंधी प्रेरक व अवरोध
- कफ़े आदतें

इससे क्षेत्र,आयु,लिंग तथा सामाजिक-आर्थिक वर्गीकरण (एसईसी) के अनुसार अखिल भारतीय उपभोग की जानकारी प्राप्त होती है जो भारत के कॉफ़ी उत्पादक तथा विपणन व्यवसायकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस रिपोर्ट में मेट्रो के कफ़े'स, वेंडिंग मशीन्स एवं रोस्टिंग व ग्राइंडिंग आउटलेट्स की निर्देशिका भी सम्मिलित हैं।

मूल्यः रू.500

अध्ययन के प्रमुख परिणामों की जानकारी के लिए - यहाँ क्लिक करें

रिपोर्ट सीडी प्रारूप में उपलब्ध है।

संपर्क-सूत्र :

सस्य-विज्ञानी,

विपणन सतर्कता एकक,

भारतीय कॉफ़ी बोर्ड,

नं.1, अंबेडकर वीथी,

बेंगलूर-560001.

भारत

दूरभाष: 91-80-22261584,22266991 (विस्तार-207)

फ़ैक्स: 91-80-22255557

ई-मेल- ageconomist.cb@gmail.com

भारत में कॉफ़ी का उपभोग- प्रमुख परिणाम

- 2008 में भारत में उपजे कुल स्वच्छ कॉफ़ी का परिमाण 94,400 टन्स अनुमानित किया गया है।
- कुल मात्रा का 73% शहरी उपभोग तथा शेष 27% ग्रामीण उपभोग के रूप (दक्षिण भारत) में पाया गया है।
- उत्तर,पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्रों में फ़िल्टर कॉफ़ी की तुलना में इंस्टेंट कॉफ़ी का उपभोग अधिक रहा है। हालाँकि दक्षिण क्षेत्र में इंस्टेंट कॉफ़ी की तुलना में फ़िल्टर कॉफ़ी का उपभोग अधिक रहा है।
- भारत में उपभोज्य कुल कॉफ़ी 94,400 टन्स में से लगभग 74,000 मे.ट यानी 78% का उपभोग केवल दक्षिण क्षेत्र में ही किया गया है।
- दक्षिण क्षेत्रों के बीच तमिलनाडु में लगभग 26,705 मे.ट यानी 36% का सबसे अधिक उपभोग रहा,जबकि कर्नाटक में 22,996 मे.ट (31%), आंध्रप्रदेश तथा केरल में लगभग 13,352 मे.ट (18%) तथा 11,127 मे.ट (15) का उपभोग किया गया है।
- 2008 में भारत की जनसंख्या के लगभग 92% ने इस पेय का उपभोग शुरू किया जबकि 2005 में यह 53% रहा। विगत कुछ वर्षों में से बहुत अधिक लोग इस पेय के परीक्षण के रूप में उपयोग करना शुरू किया है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि कॉफ़ी का “कल का उपभोग” 2005 से 2008 तक 23% से 31% तक बढ़ गई है।
- 2005 से 2008 तक कॉफ़ी का मुँह-बोला प्रचार 13% से 12% तक कम हो गया है । हालाँकि कॉफ़ी का “कल का उपभोग” बढ़ गया है। इसे (“कल का उपभोग” में वृद्धि) कॉफ़ी के कुल उपभोग से जोड़ा जा सकता है।
- विगत 12 महीनों के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर कॉफ़ी के कुल उपभोक्ताओं में से एक-तिहाई भाग घरेलू उपभोक्ता है। उत्तर,पूर्वी तथा पाश्चिमी जैसे अपारंपरिक क्षेत्रों में घर से बाह्य उपभोग को काफी प्रचुरता मिल रही है। इन सभी क्षेत्रों में घर से बाह्य कॉफ़ी का उपभोग अधिक बढ़ने की संभावना है, जोकि पश्चिम में 35% तथा पूर्व में 42% है। वेंडिंग मशीन एवं केफ़े के माध्यम से ही घर से बाह्य कॉफ़ी का उपभोग बढ़ाया जा सकता है।